

सुखी रहना है तो दूसरों को सुख देकर उनकी दुआएँ लो - शिवानी

स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स स्थित इंडोर स्टेडियम में आयोजित आध्यात्मिक समागम में शरीक हुए शहर के गणमान्य लोग

रायपुर-छ.ग.। आस्था और संस्कार चैनल पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले कार्यक्रम अवेकनिंग विद् ब्रह्माकुमारीज की मुख्य वक्ता जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्रह्माकुमारी शिवानी ने कहा कि जीवन को सुखी बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाओ। सारे दिन में हम जिनके भी सम्पर्क में आते हैं, उनके साथ हमारा कार्मिक एकाउण्ट बनता है। अगर सारा दिन हम दूसरों को दुःख देंगे तो हम स्वयं कैसे सुखी रह सकते हैं? जो कर्म हम करते हैं, उनका फल किसी न किसी रूप में हमें ही भोगना पड़ता है।

बातों को मन में न रखें
मनुष्य स्वभाव से ही सफाई पसन्द होता है। घर में कहीं पर गन्दगी हो तो उसे तुरन्त साफ करते हैं। कचरे को ज्यादा दिन रखेंगे तो कीड़े पनपेंगे, बदबू आएगी। इसी प्रकार हमारे मन में किसी के प्रति कोई दुर्भावना, ईर्ष्या या द्वेष आदि



कार्यक्रम में विशाल जनसमूह को 'जीवन में सुखी कैसे रहे' विषय पर सम्बोधित करते हुए जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्रह्माकुमारी शिवानी।

न हों। यह सब गन्दगी है जो कि हमें बीमार कर देंगे। इन्हें बाहर फेंक दें यानि भुला दें, मन में न रखें।

जीवन में खुश रहना सीखें
हम सब की यह आदत सी बन बन गई है कि हम सदा दूसरों को बदलने की कामना करते हैं, दूसरे बदलें ऐसी इच्छा रखते हैं। समझदारी इसी में है कि हम अपने कर्मों को दूसरों के लिए सुखकारी बनाएँ, जो हमारे नियंत्रण में भी होता है।

हमें इस आदत को बदलने के लिए दृढ़ता पूर्वक प्रयास करना चाहिए।

विचारों से बनता है वातावरण
हमारे विचारों से वायुमण्डल बनता है। हमारी हर सोच दूसरों तक पहुँचती है। घर का वातावरण घर में रहने वाले लोगों के सोच से बनता है। हम सब जानते हैं कि जैसा कर्म वैसा फल मिलता है। इसलिए आप अपने लिए जो चाहते हैं, वही दूसरों को दें।

जैसा अन्न वैसा मन
घर में अच्छे और पवित्र सोच के साथ खाना बनाना और खाना चाहिए। परमात्मा की याद में खाना बनाएंगे और खाएंगे तो खाना प्रसाद बन जाएगा। हमारे विचारों का अन्न पर प्रभाव पड़ता है। खाते समय भी ईश्वर को याद करके खाएँ। कभी भी टेलीविज़न देखते हुए न खाएँ। परमात्मा की याद से अन्न को शुद्ध करके खाएँ तो खून भी शुद्ध बनेगा।

हम धन जो कमाते हैं वह सात्विक हो, अर्थात् उसमें लोगों की दुआएँ शामिल हों। इसी प्रकार अन्न जो हम खाते हैं वह भी सात्विक हो और मन को भी सात्विक बनाएँ। कभी भी धन किसी को सताकर या दुःख देकर नहीं अर्जित करें। अन्यथा सुखी नहीं रह सकेंगे।

इससे पहले समारोह में विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल ने शॉ ल और श्रीफल भेंटकर ब्रह्माकुमारी शिवानी का अभिनन्दन किया। लोक निर्माण मंत्री राजेश मूणत ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया तथा महापौर प्रमोद दूबे ने प्रतीक चिन्ह प्रदान कर ब्र.कु. शिवानी का स्वागत किया। समारोह में क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला दीदी, मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक ब.कु. हेमलता और ब्र.कु. उषा दीदी उपस्थित थीं। इस अवसर पर दुर्ग के युगरत्न भाई ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर सभी को भाव विभोर कर दिया।

समाज में शान्ति स्थापना हेतु कार्य करे मीडिया



दीप प्रज्वलित करते हुए प्रो. कमल दीक्षित, गोविंद लाल बोरा, डॉ. मानसिंह परमार, सुमित अवस्थी, रमेश नैयर, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. माधुरी व अन्य।

भिलाई नगर-छ.ग.। आज देश का हर नागरिक एक पत्रकार है, क्योंकि आज सबके पास सोशल मीडिया है, जिसके माध्यम से वह अपने मनोभावों को व्यक्त करता है। लेकिन इसका उपयोग अपने विवेक को जगाकर करना चाहिए। सोशल मीडिया में जो भी करते हैं, उसकी सत्यता जानकर परखकर ही यूज करें। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज के मीडिया प्रभाग द्वारा 'मीडिया कर्मियों का आंतरिक सशक्तिकरण-समय की आवश्यकता' विषय पर आयोजित मीडिया महासम्मेलन में दिल्ली से आये मुख्य वक्ता सुमित अवस्थी, न्यूज 24 इंडिया ने व्यक्त किये। सुरेन्द्र सिंह कैम्बो, अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग ने कहा कि यहाँ के अनुभव को आत्मसात करें तथा अपने जीवन को सरल व सुरक्षित बनाने के लिए इनका प्रयोग करें।

डॉ. मानसिंह परमार, कुलपति, कुशाभाऊ ठाकरे विश्वविद्यालय, रायपुर ने कहा कि आज दुनिया की नकारात्मकता को तवज्जो न देकर उसे रचनात्मकता में बदलना होगा। मीडिया पर कोई उंगली न उठाये, ऐसी विश्वसनीयता कायम करनी है।

प्रो. कमल दीक्षित ने कहा कि पत्रकारिता में दो चीज़ों का बहुत महत्व है, पहला रचनात्मकता, दूसरा

मानसिक ऊर्जा। ये दोनों तभी आ पायेंगे जब मन बलवान होगा और मन को बलवान बनाने के लिए आध्यात्मिकता एवं राजयोग की भूमिका महत्वपूर्ण है। गोविंद लाल बोरा, प्रधान संपादक, अमृत संदेश ने कहा कि जनता से जुड़ने से ही एक पत्रकार सही तरीके से सशक्त हो सकता है। पत्रकार संयमित होकर लिखें, लिखने की स्वतंत्रता पर किसी के चरित्र की हत्या न हो। रमेश नैयर, पूर्व निदेशक, छ.ग. हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि एक पत्रकार को अंदर से सशक्त होने की बहुत आवश्यकता है, तभी वो कठिन परिस्थितियों में अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठा सकता है। ब्र.कु. प्राची ने मीडिया को मानव उत्थान के कार्य करने के लिए प्रेरित किया। ब्र.कु. तारिका ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति कराई। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आशा ने भी मीडियाकर्मियों को सम्बोधित किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. माधुरी ने किया। इस अवसर पर मीडिया कर्मियों हेतु पाँच दिवसीय राजयोग अनुभूति शिविर का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में छ.ग. के विभिन्न क्षेत्रों के प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

संस्थान कर रहा है विश्व में सार्थक बदलाव - प्रसाद

ओ.आर.सी. में दो दिवसीय आइ.टी. सम्मलेन का सफल आयोजन

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम।

देखने को मिलेगी। संस्था की सुप्रसिद्ध जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि आइ.टी. से जुड़े लोगों के लिए योग बहुत ज़रूरी है। उसके लिए हर स्थान पर योग के लिए एक छोटा-सा

भारत पर अनेक विदेशी शासकों ने राज्य किया परन्तु भारत सदा ही अपनी आध्यात्मिकता के बल पर खड़ा रहा है और हमेशा रहेगा। उपरोक्त विचार माननीय रवि शंकर प्रसाद, केन्द्रीय मंत्री, आइ.टी. व कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार ने आइ.टी. क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए दो दिवसीय सम्मलेन के दौरान 'शान्ति और खुशी के लिए आन्तरिक तकनीकी' विषय पर व्यक्त किए। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज द्वारा डिजिटल लेन-देन जागरूकता अभियान के तहत एक एप्प का भी शुभारम्भ किया। साथ ही उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था समूचे विश्व में सार्थक बदलाव के लिए एक बहुत बड़ा कार्य कर रही है। योग ही मानव को सम्पूर्ण मानव बनाता है। वर्तमान समय विज्ञान, दर्शन एवं आध्यात्म का सन्तुलन बहुत ज़रूरी है।

इस अवसर पर टी.सी.एस. के उपाध्यक्ष तन्मय चक्रवर्ती ने कहा कि अगर हम आइ.टी. के साथ आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों को भी जोड़ दें, तो जल्दी ही स्वर्णिम दुनिया की झलक

को कंट्रोल करने के लिए हमें अपनी आन्तरिक तकनीकी को पहचानना होगा। इस अवसर पर विशेष रूप से माउण्ट आबू से आए ब्र.कु. यशवन्त ने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा आइ.टी. के क्षेत्र



सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री रवि शंकर प्रसाद। मंचासीन हैं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी, तन्मय चक्रवर्ती, ब्र.कु. यशवन्त, ब्र.कु. रमा व अन्य।

कमरा हो, जहाँ पर शान्ति की अनुभूति कर सकें। अगर हम थोड़ा समय भी स्वयं को आध्यात्मिक शांति से जोड़ेंगे तो कार्य करने में भी एक नवीनता का अनुभव होगा।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि हम अपनी कमज़ोरियों का चिंतन करने के बजाए अपनी विशेषताओं को बढ़ाएँ। उन्होंने कहा कि हम दूसरों को कंट्रोल नहीं कर सकते, स्वयं को ही कंट्रोल कर सकते हैं। स्वयं

में की जा रही सेवाओं की जानकारी दी। दो दिन तक चले कार्यक्रम में आध्यात्मिक विषय पर अनेक अनुभवी वक्ताओं ने अपने विचार रखे। साथ-साथ अनेक कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। राजयोग के विशेष अभ्यास के द्वारा भी सभी ने गहन शान्ति एवं खुशी का अनुभव किया। कार्यक्रम में 1200 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम का संचालन दिल्ली से आई ब्र.कु. कमला ने किया।